

रॉबर्ट वेनॉय, प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 15

प्रभु सेवक थीम जारी

2. प्रभु का सेवक (ईसा. 42:1-7) और प्रश्न

हम यशायाह 42:1-7 में हैं। आपके पास नौकर के काम का काफी लंबा वर्णन है, खासकर श्लोक 4 में जहां आप पढ़ते हैं, " जब तक वह न्याय को पृथ्वी पर स्थापित न कर दे, तब तक वह न तो टलेगा और न हतोत्साहित होगा।" द्वीप उसके कानून पर अपनी आशा रखेंगे। फिर श्लोक 6 तक, " मैं, यहोवा, ने तुम्हें धर्म से बुलाया है: मैं तुम्हारा हाथ पकड़ लूंगा।" मैं तुझे इसलिये रखूंगा, कि तू प्रजा के लिथे वाचा, और अन्यजातियोंके लिथे ज्योति ठहरे, कि अंधी आंखें खोल दे, और बन्धुओंको बन्दीगृह से छुड़ाए, और जो अन्धियारे में बैठे हैं, उनको कालकोठरी से छुड़ाए ।

जब हम 41:8 में पहले ही पढ़ चुके हैं कि "हे इस्राएल, तू, मेरा दास," प्रश्न उठ सकते हैं। यह कैसे संभव है कि इज़राइल उन चीज़ों को पूरा करने जा रहा है जिनका श्रेय यहाँ नौकर के काम को दिया जाता है? यह प्रश्न न केवल पाठक या श्रोता के मन में आ सकता है, बल्कि यह एक ऐसा प्रश्न है जिसे पाठ में ही संबोधित किया गया है क्योंकि जब आप अध्याय 42, श्लोक 19 में जाते हैं, तो आप पढ़ते हैं, " कौन अंधा है, लेकिन मेरा नौकर, या बहरा, मेरे द्वारा भेजे गए दूत की तरह? जो मेरे प्रति समर्पित है, उसके समान कौन अन्धा है, अर्थात् यहोवा के दास के समान कौन अन्धा है? तुमने बहुत सी चीज़ें देखी हैं, परन्तु उन पर ध्यान नहीं दिया; तुम्हारे कान खुले हैं, परन्तु तुम कुछ नहीं सुनते ।" श्लोक 22 आगे कहता है, "परन्तु यह तो लूटी हुई और लूटी हुई प्रजा है; वे सभी गड्डों में फंस गए या जेलों में छुप गए। वे लूटे गए हैं और उनका कोई छुड़ानेवाला नहीं है।" इसराइल कैदियों को जेल से कैसे बाहर लाएगा जब वे खुद जेल में हैं? जब वे अंधे, लुटे हुए और बर्बाद हो चुके हैं तो वे राष्ट्रों के लिए रोशनी कैसे बनेंगे? और वहाँ एक वास्तविक प्रश्न प्रतीत होता है, और आप आश्चर्य करते हैं कि इसका उत्तर क्या हो सकता है।

यशायाह 24:24 लेकिन अध्याय 42, श्लोक 24, एक और विचार उठाता है और उसका परिचय देता है: " किस ने याकूब को लूटने के लिये, और इस्राएल को लुटेरों के हाथ में सौंप दिया?

“इज़राइल उस स्थिति में क्यों है - निर्वासन में? “ किस ने याकूब को लूटने के लिये, और इस्राएल को लुटेरों के हाथ में सौंप दिया? क्या वह यहोवा नहीं, जिसके विरुद्ध हम ने पाप किया है? क्योंकि वे उसके मार्ग पर न चलेंगे; उन्होंने उसकी व्यवस्था का पालन नहीं किया।” तो इज़राइल जिस स्थिति में है उसका कारण यह है कि उसने ईश्वर के विरुद्ध पाप किया है, और ईश्वर ने अपने लोगों को निर्वासन और पीड़ा में डाल दिया है। तो इस बिंदु पर जो स्थिति विकसित हुई वह यह है: इज़राइल ईश्वर का सेवक है, और इज़राइल को राष्ट्रों के लिए प्रकाश बनना है, पृथ्वी के छोर तक न्याय लाना है, और कैदियों को जेल से छुड़ाना है, फिर भी इज़राइल स्वयं इसमें है बंधन और अंधकार में। इस्राएल को स्वयं एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

मैं सोचता हूँ कि जो मुद्दा यहां लाया गया है, हालांकि कुछ हद तक अप्रत्यक्ष रूप से, यह पाप प्रश्न है। निर्वासन से मुक्ति महत्वपूर्ण है, लेकिन पाप से मुक्ति अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि पाप ही निर्वासन का कारण बना है। इसलिए वास्तविक समस्या का सामना करने की जरूरत है। मुझे लगता है कि यहां जो संकेत दिया गया है वह यह है कि निर्वासन उनकी समस्या नहीं हो सकती। असली समस्या पाप है। “ किस ने याकूब को लूटने के लिये, और इस्राएल को लुटेरों के हाथ में सौंप दिया? क्या वह यहोवा नहीं, जिसके विरुद्ध हम ने पाप किया है? क्योंकि वे उसके मार्ग पर न चलेंगे; उन्होंने उसकी व्यवस्था का पालन नहीं किया। ” इस समय उठने वाले इन प्रश्नों का कोई समाधान नहीं है। इज़राइल को यह कार्य या यह कार्य कैसे करना है? इस पाप प्रश्न का समाधान कैसे किया जाए? समस्या के पहलुओं पर गौर करने की जरूरत है, लेकिन कोई समाधान नहीं है।

तो इस परिच्छेद में नौकर के बारे में कई बातें हैं। यदि आप अध्याय के आरंभिक भाग पर नज़र डालें, तो श्लोक 1 में नौकर प्रभु का चुनाव हुआ है: “मेरे सेवक को देखो, जिसे मैं सम्भालता हूँ; मेरा चुनाव।” सेवक के पास प्रभु की आत्मा है: “मैं ने उस पर अपना आत्मा डाला है,” आप पद 2 और 3 में उसके चरित्र की नम्रता देख सकते हैं: “वह कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा, वह धूए हुए सन को न बुझाएगा।” पद 4, “वह जाति जाति का न्याय करेगा, और पृथ्वी पर न्याय स्थापित करेगा; समुद्र तट उसके कानून की प्रतीक्षा करेंगे।” श्लोक 6, “वह अन्यजातियों के लिए ज्योति होगा।” श्लोक 7, “बंदियों को कारागार से मुक्त करने के लिए।” लेकिन फिर आप छंद 19 और 20 पर

आते हैं, आपको यह समस्या मिलती है: प्रभु का सेवक, जिसे ये काम करना चाहिए, वह अंधा है: "मेरे सेवक के अलावा कौन अंधा है?"

3. यशायाह 43:10

आइए अगले सेवक परिच्छेद पर चलते हैं, वह तीसरा होगा, जो यशायाह 43:10 है। वहाँ तुम पढ़ते हो, "यहोवा की यह वाणी है, कि तुम मेरे गवाह हो, और मेरे दास हो, जिन्हें मैं ने इसलिये चुना है, कि तुम मुझे जान लो, और मेरी प्रतीति करो, और समझ लो कि मैं वही हूँ। मुझसे पहले कोई भगवान नहीं बना, न मेरे बाद कोई बनेगा।" अब वह श्लोक अध्याय 43 की शुरुआत में बहुत प्रसिद्ध मार्ग के बगल में आता है। वास्तव में 43:1-4 सुंदर छंद हैं। तुम वहाँ पढ़ते हो, "परन्तु अब यहोवा यों कहता है, हे याकूब, जिस ने तुझे बनाया है; हे इस्राएल, जिस ने तेरा रचयिता है, मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है; मैंने तुम्हें नाम लेकर बुलाया है; तुम मेरे हो। जब तू जल में से होकर पार हो, तब मैं तेरे संग संग रहूँगा; और जब तुम नदियों में से होकर चलो, तब वे तुम्हें न डुला सकेंगी। जब तुम आग में चलो, तो न जलोगे; आग की लपटें तुम्हें नहीं जलाएंगी." परमेश्वर कहते हैं, इस्राएल के पाप के बावजूद, वह उसे बचाएगा; जब वह जल में से होकर चले, तब वह उसके संग रहेगा। इसका मतलब यह नहीं है कि वह कठिनाइयों से नहीं गुजरेगी, लेकिन वह पूरी तरह से नष्ट या खत्म नहीं होगी।

पद 10 फिर कहता है कि इस्राएली उसके गवाह हैं: "यहोवा की यह वाणी है, तुम मेरे गवाह हो, और मेरे सेवक हो, जिसे मैंने चुना है।" इसलिए जो कुछ भी हुआ है, उसके बावजूद, इज़राइल भगवान का सेवक है। इज़राइल वह माध्यम है जिसके माध्यम से अध्याय 42, मान लीजिए पद 4 और पद 6 का विश्वव्यापी कार्य पूरा किया जाना है। "तुम मेरे गवाह हो।" तो आपके पास बस वह एक श्लोक है जो सेवक विषय को छूता है: श्लोक 10।

यशायाह 43:22-25 अपने लोगों के पाप पर भगवान की निराशा लेकिन जब आप यशायाह 43:22 पर आते हैं और उसका अनुसरण करते हैं, तो आपके पास एक समान विचार होता है

अध्याय 42 के अंत तक - पिछले अध्याय का अंत। यहां आपको अपने लोगों के पाप पर भगवान की निराशा का एक बयान मिलता है। उन्हें उसके गवाह बनना था, फिर भी वे पापी लोग थे। अध्याय 43, श्लोक 22 में कहा गया है, “ तू होमबलि के लिये मेरे लिये भेड़ें नहीं लाया, और न अपने बलिदानों से मेरा आदर किया। मैं ने तुम पर अन्नबलि का बोझ नहीं डाला, और न धूप की मांग करके तुम्हें थकाया। तू ने मेरे लिये कोई सुगन्धित कत्था नहीं मोल लिया , और न अपने बलिदानों की चर्बी मुझ पर लुटाई। परन्तु तू ने मुझ पर अपने पापों का बोझ लाद दिया है, और अपने अपराधों से मुझे थका दिया है। ” तो यहाँ अध्याय 42 के अंत में उसी प्रकार का विचार पाया गया है - स्थिति की निराशा। इस्राएल को परमेश्वर का गवाह बनना था; इस्राएल को अन्यजातियों के लिए प्रकाश लाना था, परन्तु "तू ने मुझ पर अपने पापों का बोझ डाला है, तू ने मुझे अपने अधर्म के कामों से थका दिया है।"

लेकिन फिर अध्याय 43, श्लोक 25, एक उल्लेखनीय बयान देता है: " मैं, मैं ही वह हूँ जो अपने खातिर तुम्हारे अपराधों को मिटा देता हूँ, और तुम्हारे पापों को फिर याद नहीं करता । ” इसलिए उनके पाप के बावजूद, भगवान कहते हैं कि वह उनके अपराधों को मिटा देंगे, उन पापों को समाप्त कर देंगे जो वास्तव में उस पीड़ा के लिए जिम्मेदार हैं जिसमें वे आए हैं। तो यह एक और विचार प्रस्तुत करता है, और यहाँ प्रश्न उठाया जा सकता है: “यह कैसे संभव है? परमेश्वर सरलता से कैसे कह सकता है, 'मैं तुम्हारे अपराधों को मिटा दूंगा, मैं तुम्हारे पापों को स्मरण नहीं रखूंगा'”? फिलहाल इसका कोई जवाब नहीं है, लेकिन यह एक सवाल जरूर उठता है। लेकिन यहाँ आप देखते हैं कि सेवक को प्रभु ने चुना था, यदि आप श्लोक 10 पर वापस जाएँ, ताकि वह ईश्वर को जान सके और उस पर विश्वास कर सके। “मेरा दास, जिसे मैं ने इसलिये चुन लिया है, कि तू मुझे जाने, और मेरी प्रतीति करे, और समझे कि मैं वही हूँ। ” तौभी इस्राएल ने यहोवा के विरुद्ध बलवा किया है, और यहोवा के प्रति वफ़ादार नहीं रहे, बल्कि अपने पापों का बोझ यहोवा पर डाल दिया है। लेकिन फिर आयत 25 कहती है, "मैं वह हूँ जो अपने लिए अपराधों को मिटा देता हूँ।"

परिच्छेद की सीमा को परिभाषित करना कुछ कठिन है । "नौकर" शब्द का उल्लेख 43:10 में किया गया है, और यदि आप संदर्भ में जाते हैं, तो यह बिल्कुल स्पष्ट लगता है कि 43:10 में नौकर

इज़राइल है, जैसा कि अध्याय 41 में था। निम्नलिखित में से अधिकांश इज़राइल के बारे में बात कर रहा है जिसे यहां भगवान के सेवक के रूप में पहचाना गया है। तो, श्लोक 10 से शेष अध्याय तक, सेवक विषय शेष अध्याय में प्रवाहित होता है।

पद 22 से 25 में सेवक इस्राएल के विषय में बोल रहे थे। इस सन्दर्भ में इज़राइल सेवक है। यह एक और सवाल है जो उठता है: नौकर कौन है - क्या यह इज़राइल है या यह इज़राइल से अलग कोई है, जो इज़राइल का हिस्सा है, लेकिन अभी तक यह निर्धारित नहीं किया गया है कि कौन है? जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं यह स्पष्ट हो जाता है। इस बिंदु पर, इस प्रश्न का कोई समाधान नहीं है।

अध्याय 43, पद 23: “ तू होमबलि के लिये मेरे लिये भेड़ें नहीं लाया, और न अपने बलिदानों से मेरा आदर किया। मैं ने तुम पर अन्नबलि का बोझ नहीं डाला , और न धूप की मांग करके तुम्हें थकाया है । अर्थात्, "मैं ने तुम पर अन्नबलि का बोझ नहीं डाला है," इसकी तुलना में, "तू ने मुझ पर अपने पापों का बोझ डाला है, तू ने मुझे और भी अधर्म के कामों से थका दिया है।" NASB किसके पास है? वह कहता है, मैं ने तुम पर न तो चढ़ावे का बोझ डाला, और न धूप से थकाया। लेकिन NASB और NIV दोनों इस पर सहमत हैं, और संभवतः इसके लिए अच्छा कारण है। इससे श्लोक 23 में वह स्पष्ट कथन हटा दिया जाएगा; लेकिन जब आप 24 में आगे बढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट है कि यहां इज़राइल को अपने दायित्वों को पूरा करने में कमी के लिए दोषी ठहराया जा रहा है - " आपने मेरे लिए कोई सुगंधित कैलमस नहीं खरीदा है, न ही अपने बलिदानों की चर्बी मुझ पर खर्च की है।" परन्तु तू ने मुझ पर अपने पापों का बोझ लाद दिया है, और अपने अपराधों से मुझे थका दिया है ।” देखिए, राजा जेम्स 23बी में कहते हैं, "मैंने तुम्हें न तो भेंट चढ़ाने को कहा है, न ही तुम्हें धूप जलाने से थकाया है।" और एनआईवी कहता है, "मैंने तुम पर अन्नबलि का बोझ नहीं डाला है, न ही धूप की मांग करके तुम्हें थकाया है।" यह केवल "भेंट" और "अनाज भेंट" के बीच का अंतर है; बहुत कम अंतर. श्लोक 24बी वह है जो वास्तव में मुझे को ध्यान में लाता है: "तुमने मुझ पर अपने पापों का बोझ डाला है और मुझे अपने अपराधों से थका दिया है।" फिर भी, प्रभु कहते हैं, "मैं तुम्हारे अपराधों को मिटा दूंगा।"

4. यशायाह 44:1-2 आइए चौथे सेवक परिच्छेद पर चलते हैं, जो यशायाह 44:1-2 है। यहां आप फिर से इस प्रश्न पर आते हैं कि आप इस परिच्छेद को कितनी दूर तक बढ़ाते हैं। आप पद 8 तक जा सकते हैं, कम से कम, लेकिन निश्चित रूप से 1 और 2। अध्याय 44 में आप पढ़ते हैं, " परन्तु अब हे याकूब, हे मेरे सेवक इस्राएल, सुन, जिसे मैं ने चुना है। तेरा रचयिता, जो तुझे गर्भ में रचता, और जो तेरी सहायता करेगा वही यहोवा यों कहता है, हे याकूब, हे मेरे दास यशूरून, हे मेरे चुने हुए सेवक, तू मत डर। " ऐसा लगता है कि यह उस कार्य की पूर्ति की निश्चितता की घोषणा है जो भगवान ने अपने सेवक को सौंपा है। उन्होंने जो कार्य किया उसका वर्णन अध्याय 42 में किया गया है। लेकिन पहले पाँच श्लोकों में, श्लोक 2 में नौकर का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है।

पहली पाँच आयतों में आपने पढ़ा कि याकूब को डरने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि परमेश्वर इस्राएल के वंश पर अपनी आत्मा उँडेलेगा। आपने उसे अध्याय 44, पद 3 में पढ़ा: " क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर जल की धाराएं बहाऊंगा; मैं तेरे वंश पर अपना आत्मा और तेरे वंश पर अपनी आशीष उण्डेलूंगा। वे घास के मैदान में घास की तरह, और बहती जलधाराओं में चिनार के पेड़ों की तरह उगेंगे। " अतः परमेश्वर इस्राएल के वंश पर अपनी आत्मा उण्डेलेगा और उसके वंशजों की एक बड़ी भीड़ को अस्तित्व में लाएगा। ऐसा कहा जाता है कि वे जलधाराओं के किनारे विलो की तरह उग आते हैं। "मैं अपनी आत्मा तुम्हारे वंश पर उण्डेलूंगा," पद 3 का अंत, " और तुम्हारे वंशजों पर अपना आशीर्वाद दूँगा। वे घास के मैदान में घास की तरह, और बहती जलधाराओं में चिनार के पेड़ों की तरह उगेंगे। कोई कहेगा, 'मैं यहोवा का हूँ'; दूसरा अपने आप को याकूब के नाम से पुकारेगा; और कोई अपने हाथ पर लिखेगा, 'यहोवा का,' और इस्राएल नाम अपनाएगा। इस्राएल का राजा और उद्धारक, सर्वशक्तिमान यहोवा यों कहता है: 'मैं ही प्रथम हूँ और मैं ही अंतिम हूँ; मेरे अलावा कोई ईश्वर नहीं है । "

भूमि," जिसके बारे में वह फिर समझाता है, "मैं अपनी आत्मा तेरे वंश पर उण्डेलूंगा।" इस भविष्यवाणी की पूर्ति यशायाह 32:15 में है। याद रखें, यह फलदार खेत को जंगल में और जंगल को फलदार खेत में बदलने की उस अभिव्यक्ति के संदर्भ में था, जिसे पायने असीरियन अग्रिम के

प्रभाव के रूप में व्याख्या करता है। लेकिन यहां यह कहा गया है कि इस भविष्यवाणी की पूर्ति 32:15 की तुलना में बाद में सन्हेरीब के आगमन के बदले में आशा लाने के लिए भगवान की आत्मा के आने से होगी। फिर भी यह आत्मा के सहस्राब्दी उंडेले जाने पर 59:21बी से पहले का है। तो पायने जो देखता है वह यह है: जब यह कहता है, "मैं अपनी आत्मा तेरे वंश पर और अपना आशीर्वाद तेरे वंश पर उण्डेलूंगा। वे घास के मैदान में घास की तरह उगेंगे," यह गैर-यहूदी उत्कीर्णन की बात कर रहा है। यह अगले पद 44:5 में आता है। उनका सुझाव है कि 44:3-4 जोएल 2:28-29 के समानांतर है, जो पेंटेकोस्ट की भविष्यवाणी करता है। आप देखते हैं, जब आप आयत 4 और 5 में बहती जलधाराओं के किनारे चिनार की तरह उगने वाली संतानों के बारे में पढ़ते हैं, और "कोई कहेगा, 'मैं यहोवा का हूँ';" दूसरा अपने आप को याकूब के नाम से पुकारेगा; फिर भी कोई अपने हाथ पर लिखेगा, 'यहोवा का,' और इस्राएल नाम अपनाएगा"; जैसे-जैसे सुसमाचार फैलेगा, ये सभी लोग स्वयं को परमेश्वर के लोगों के साथ पहचानने लगेंगे। तो, यह संभवतः उन छंदों में दिखाई देता है। यहाँ नौकर के बारे में बहुत कुछ नहीं कहा गया है, जहाँ तक अतिरिक्त जानकारी है जो 42:6 के साथ फिट बैठती है, जहाँ नौकर राष्ट्रों की ज्योति, अन्यजातियों के लिए ज्योति होगा।

5. यशायाह 44:21 सेवक और मूर्तिपूजा की व्यर्थता आइए अगले सेवक अंश पर चलते हैं, यशायाह 44:21। फिर, यह कोई प्रमुख अंश नहीं है, बल्कि यह नौकर का संदर्भ है। फिर, मार्ग पर एक सटीक सीमा लगाना कठिन है। परन्तु 44:21 कहता है, "हे याकूब, इन बातों को स्मरण रख, क्योंकि हे इस्राएल, तू मेरा दास है। हे इस्राएल, मैं ने तुझे बनाया है; हे इस्राएल, तू मेरा दास है; मैं तुझे न भूलूंगा।" अब, उस कविता को फिर से संदर्भ में देखा जाना चाहिए क्योंकि 44:21 के कथन और उसके पहले के कथन के बीच एक इच्छित विरोधाभास है। जिस तरह से यह शुरू होता है उस पर ध्यान दें: "इन्हें याद रखें" - और "ये" का तात्पर्य पहले क्या है। क्या पहले एक अंश दिया गया है जो मूर्तिपूजा की निरर्थकता, मूर्तियों की पूजा करने की मूर्खता के बारे में बात करता है। तो, "ये बातें"; "हे याकूब, इन बातों को स्मरण रख, क्योंकि तू मेरा दास है, हे इस्राएल।" "ये बातें" क्या हैं, यह है कि मूर्तिपूजा मूर्खता है।

जो पहले आता है वह क्लासिक अनुच्छेदों में से एक है। याद रखें, यह यशायाह के दूसरे खंड में प्रमुख विषयों में से एक था - मूर्तिपूजा की निरर्थकता। यह उस पर क्लासिक अनुच्छेदों में से एक है। अध्याय 45, श्लोक 9 और निम्नलिखित को देखें: “ जितने मूर्तियाँ बनाते हैं वे सब व्यर्थ हैं, और जो वस्तुएँ वे सँजोकर रखते हैं वे व्यर्थ हैं। जो लोग उनके लिए बोलेंगे वे अंधे हैं; वे अपनी ही लज्जा के कारण अज्ञानी हैं। कौन देवता बनाता और मूर्ति बनाता है, जिससे उसे कुछ लाभ नहीं होता? वह और उसके परिवारजन लज्जित होंगे; कारीगर मनुष्य के अलावा और कुछ नहीं हैं। वे सब एक साथ आएँ और अपना पक्ष रखें; वे आतंक और बदनामी में फँस जायेंगे। लोहार एक औज़ार लेता है और उससे अंगारों में काम करता है; वह हथौड़ों से एक मूर्ति बनाता है, वह अपनी भुजा की शक्ति से उसे गढ़ता है। उसे भूख लगती है और उसकी शक्ति नष्ट हो जाती है; वह पानी नहीं पीता और बेहोश हो जाता है। बढ़ई एक रेखा से मापता है और एक मार्कर से एक रूपरेखा बनाता है; वह इसे छेनी से खुरदरा करता है और कम्पास से इस पर निशान लगाता है। वह इसे मनुष्य के रूप में, अपनी सारी महिमा में मनुष्य के रूप में आकार देता है, ताकि यह एक मंदिर में रह सके। उसने देवदार के पेड़ काट डाले, या शायद एक सरू या बांज ले लिया। उसने उसे जंगल के पेड़ों के बीच उगने दिया, या चीड़ लगाया, और बारिश से वह बड़ा हो गया। यह मनुष्य के जलने का ईंधन है; वह उसमें से कुछ लेता है और खुद को गर्म करता है, वह आग जलाता है और रोटी पकाता है। परन्तु वह एक देवता भी बनाता और उसकी पूजा करता है; वह एक मूर्ति बनाता है और उसे प्रणाम करता है। आधी लकड़ी वह आग में जला देता है; उस पर वह अपना भोजन तैयार करता है, वह अपना मांस भूनता है और पेट भरकर खाता है। वह खुद को गर्म भी करता है और कहता है, 'आह! मैं गर्म हूँ; मुझे आग दिख रही है।' शेष से वह एक देवता, अपनी मूर्ति बनाता है; वह उसे दण्डवत् करता है और दण्डवत् करता है। वह उससे प्रार्थना करता है और कहता है, 'मुझे बचा; आप तो मेरे लिए भगवान हैं।' वे कुछ नहीं जानते, वे कुछ नहीं समझते; उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दी गई है ताकि वे देख न सकें, और उनके दिमाग बंद कर दिये गये हैं ताकि वे समझ न सकें। कोई भी सोचने के लिए नहीं रुकता, किसी के पास यह कहने के लिए ज्ञान या समझ नहीं है, 'इसका आधा हिस्सा मैंने ईंधन के लिए इस्तेमाल किया; मैंने उसके अंगारों पर रोटी भी पकाई, मांस भूना

और खाया। क्या जो कुछ बचा है उस से घृणित वस्तु बनाऊं? क्या मैं लकड़ी के एक टुकड़े को प्रणाम करूँ?' वह राख खाता है, भरमाया हुआ मन उसे भरमाता है; वह अपने आप को बचा नहीं सकता, और यह नहीं कह सकता, 'क्या यह बात मेरे दाहिने हाथ में झूठ नहीं है? "

फिर आप देखते हैं कि आप पद 21 पर पहुँचते हैं, "हे याकूब, इन बातों को स्मरण रख, क्योंकि हे इस्राएल, तू मेरा दास है।" तो यह जो आगे बढ़ता है उसके विपरीत है: मूर्तिपूजा मूर्खता है। " हे याकूब, इन बातों को स्मरण रख, क्योंकि हे इस्राएल, तू मेरा दास है। मैं ने तुझे बनाया है, तू मेरा दास है; हे इस्राएल, मैं तुझे नहीं भूलूँगा।" परमेश्वर सेवक से किया गया अपना वादा पूरा करेगा। नौकर का काम बनेगा। परमेश्वर अपने सेवक को नहीं भूलेगा। फिर 43:25 के समान एक और कथन है: "मैं, मैं ही वह हूँ जो तुम्हारे अपराधों को मिटा देता हूँ।" यहाँ 44:22 में, " मैं ने तेरे अपराधों को बादल के समान, और तेरे पापों को भोर के कोहरे के समान मिटा दिया है। मेरे पास लौट आओ, क्योंकि मैं ने तुम्हें छुड़ा लिया है।"

यशायाह 44:24-28 कुसू के माध्यम से परमेश्वर का महान उद्धार , सेवक के बारे में उस संक्षिप्त कथन के बाद, उस बिंदु पर जो होता है, वह एक लंबा वाक्य है, छंद 24-28, जो प्रभु की महानता को दर्शाता है कि वह निर्वासन से उद्धार करेगा। परमेश्वर यरूशलेम का पुनर्निर्माण करेगा, मेसोपोटामिया की शक्ति को नष्ट करेगा, और इस्राएल को निर्वासन से छुड़ाने के लिए साइरस को अपने साधन के रूप में खड़ा करेगा। तो आपके पास अगले परिच्छेद 24-28 में एक अद्भुत भविष्यवाणी है। यहां मनश्शे के समय के संदर्भ को याद रखें, शायद साइरस से डेढ़ सदी पहले, लेकिन यहां 24-28 में आपने जो पढ़ा है: "यहोवा यही कहता है - तुम्हारा उद्धारकर्ता, जिसने तुम्हें गर्भ में बनाया: मैं मैं यहोवा हूँ, जिसने सब कुछ बनाया, जिसने अकेले ही आकाश को फैलाया, जिसने अकेले ही पृथ्वी को फैलाया, जो झूठे भविष्यद्वक्ताओं के संकेतों को विफल करता है और भविष्यद्वक्ताओं को मूर्ख बनाता है, जो बुद्धिमानों की शिक्षा को नष्ट कर देता है और उसे बकवास में बदल देता है जो अपने सेवकों की बातें पूरी करता है, और अपने दूतों की भविष्यवाणियों को पूरा करता है, जो यरूशलेम के विषय में कहता है, 'यह बसाया जाएगा,' यहूदा के नगरों के बारे में, 'वे

बनाए जाएंगे,' और उनके खंडहरों के बारे में, 'मैं करूंगा जो गहरे जल से कहता है, सूख जा, मैं तेरी जलधाराओं को सुखा डालूंगा; जो कुसू के विषय में कहता है, वह मेरा चरवाहा है, और जो कुछ मैं चाहूँ वह पूरा करेगा; वह यरूशलेम के विषय में कहेगा, 'उसे फिर बनाया जाए,' और मन्दिर के विषय में, 'उसकी नींव डाली जाए।' यहोवा अपने अभिषिक्त कुसू से यों कहता है, जिसका दाहिना हाथ मैं इसलिये पकड़ता हूँ, कि जाति जाति को उसके साम्हने वश में कर दूँ, और राजाओं के हथियार छीन लूँ, और उसके साम्हने द्वार खोल दूँ, कि फाटक बन्द न हों: मैं आगे आगे चलूंगा तुम और पहाड़ों को समतल करोगे; मैं पीतल के फाटकोंको तोड़ डालूंगा, और लोहेके बेड़ोंको काट डालूंगा। मैं तुम्हें अन्धियारे का धन, अर्थात् गुप्त स्थानों में रखा हुआ धन दूंगा, जिससे तुम जान लो कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम्हें नाम ले लेकर बुलाता हूँ ।

तो अध्याय 45 के शुरुआती छंद और 44 के अंत में कहा गया है कि कुसू को भगवान द्वारा कई देशों को जीतने और यहां तक कि बेबीलोन को जीतने के लिए नियुक्त किया गया है। आपने पढ़ा कि बेबीलोन के राजा का धन उसे दिया जाएगा: श्लोक 3, " मैं तुम्हें अंधकार का धन, अर्थात् गुप्त स्थानों में रखा हुआ धन दूंगा ।" ताकि जब यह सब घटित हो, तो जिन लोगों ने यशायाह की भविष्यवाणी पढ़ी है उनके पास इस्राएल के परमेश्वर की शक्ति का प्रमाण होगा। तो श्लोक 4 कहता है, जहां सेवक का उल्लेख है, कि कुसू की सभी विजयें "मेरे सेवक" याकूब के कारण प्राप्त हुई हैं। सो दास वही है, जिस की भलाई के लिये कुसू को खड़ा किया गया, और जिस की भलाई के लिये यह भविष्यवाणी की गई।

जोसेफस द्वारा यंग की टिप्पणी में एक भविष्यवाणी का उल्लेख किया गया है, जो खंड III, पृष्ठ 197 है। वह श्लोक 3 में कहता है, "मैं तुम्हें अंधेरे के खजाने, और गुप्त स्थानों का धन दूंगा, जिसे तुम जान सकते हो।" भाषा आवश्यक रूप से साइरस की ओर से सच्चे रूपांतरण का सुझाव नहीं देती है, लेकिन बस यह कि वह उस व्यक्ति की पहचान करने में सक्षम होगा जिसने उपलब्धियों में उसका उपयोग किया है। जोसेफस में एक दिलचस्प बयान है, इस तथ्य में कि यशायाह की भविष्यवाणी का वास्तव में साइरस पर प्रभाव था। यंग ने इसे जोसेफस से लिया , जहां जोसेफस का कहना है कि साइरस को ये बातें पता थीं क्योंकि उसने इस भविष्यवाणी की किताब

पढ़ी थी, जिसे यशायाह ने पीछे छोड़ दिया था दो सौ दस साल पहले. वह *पुरावशेष* 1, पैराग्राफ 2 में है।

अब, यंग जोसेफस में उस संदर्भ पर टिप्पणी करते हैं। उनका कहना है कि ऐसा मामला उतना असंभव नहीं है जितना कुछ लोग मानते होंगे। साइरस ने यहूदियों के लिए मुक्ति की घोषणा की। यह दिलचस्प है, यदि आप एज्रा, अध्याय 1 को देखें, जहाँ आपको कुसू की उद्घोषणा मिलती है, तो श्लोक 2 पर ध्यान दें, " फारस का राजा कुसू यह कहता है: 'स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने मुझे सारे राज्य दिए हैं।" पृथ्वी और उसने मुझे यहूदा में यरूशलेम में उसके लिए एक मंदिर बनाने के लिए नियुक्त किया है । " आप देखते हैं, वहां वह इस्राएल के परमेश्वर को पहचानता है। "स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने मुझे पृथ्वी भर का राज्य दिया है।" यह यशायाह के साथ बिल्कुल फिट बैठता है: "ताकि तुम जान लो कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूँ।" तात्पर्य यह है कि आपमें से कुछ लोग नहीं जानते। *फारस के इतिहास* पर एडविन यामूची की एक नई किताब आई है । यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या वह इस पर कुछ जिक्र करते हैं।

7. यशायाह 48:16-49:3 सातवां सेवक मार्ग यशायाह 48:16 है। अब, जब आप 48:16 पढ़ते हैं, तो आपको "नौकर" शब्द नहीं दिखता - यह वहां नहीं होता है। लेकिन मुझे लगता है कि नौकर स्पष्ट रूप से दृश्य में है, भले ही आप शब्द नहीं देखते हैं। एक मिनट में इसके बारे में और अधिक जानकारी। ठीक है, आइए श्लोक 16 पढ़ें, "' मेरे पास आओ और इसे सुनो: पहली घोषणा से मैंने गुप्त रूप से बात नहीं की है; जिस समय ऐसा होता है, मैं वहीं होता हूँ।' और अब परमप्रधान यहोवा ने अपनी आत्मा के साथ मुझे भेजा है ।" अब, 48:16 एक दिलचस्प कविता है, और जब इसे इसके तत्काल संदर्भ में रखा जाता है तो यह व्याख्या की एक गंभीर समस्या प्रस्तुत करता है। इस संदर्भ में यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि यह उस व्यक्ति द्वारा बोला जा रहा है जो अध्याय के आरंभ में लोगों को अपनी बात सुनने के लिए बुलाता है। पहले पद पर वापस जाएँ और देखें कि पद 16 से पहले क्या है। अध्याय 48, पद 1: "हे याकूब के घराने, तुम जो इस्राएल के नाम से बुलाए जाते हो, और यहूदा के वंश से आते हो, तुम इस पर ध्यान दो, तुम जो यहूदा के वंश से आते हो। यहोवा के

नाम की शपथ खाओ, और इस्राएल के परमेश्वर का स्मरण करो, परन्तु सच्चाई या धर्म से नहीं। ” “ हे याकूब के घराने, मैं इस पर ध्यान दे ।”

फिर पद 3, (ध्यान रखें कि कौन बोल रहा है): “ पहिली बातें मैं ने बहुत पहिले से बता दी, और अपने मुंह से प्रगट किया, और प्रगट किया; फिर अचानक मैंने कार्रवाई की और वे पूरे हो गये। क्योंकि मैं जानता था कि तुम कितने हठीले हो; तेरी गर्दन की नसें लोहे की, और तेरा माथा पीतल का था ।” पद 5: “ इसलिये मैं ने ये बातें तुम से बहुत पहिले कह दी थीं; उनके घटित होने से पहिले ही मैं ने उनको तुम्हें बता दिया, कि तुम न कह सको, कि वे मेरी मूरतों ने किए; मेरी लकड़ी की मूरत और धातु के देवता ने उन्हें ठहराया ।” श्लोक 9: “ मैं अपने नाम के लिये अपने क्रोध को टालता हूं ।” पद 12: “ हे याकूब, मेरी सुन; इस्राएल, जिसे मैं ने बुलाया है: वह मैं हूं; मैं प्रथम हूं और मैं ही अंतिम हूं। मेरे ही हाथ ने पृथ्वी की नेव डाली, और मेरे दाहिने हाथ से आकाशमण्डल फैलाया; जब मैं उन्हें बुलाता हूँ तो वे सब एक साथ खड़े हो जाते हैं ।”

आप देखते हैं, यदि आप नीचे जाते हैं, तो पहला व्यक्ति, "मैं", जो पूरे अध्याय में बोल रहा है, स्पष्ट रूप से भगवान प्रतीत होता है; और जब आप श्लोक 12 और 13 से 15 तक आगे बढ़ते हैं, “ मैंने, यहाँ तक कि मैंने भी कहा है; हां, मैंने उसे फोन किया है। मैं उसे ले आऊंगा, और वह अपने उद्देश्य में सफल होगा ।” स्पष्ट प्रतीत होता है कि श्लोक 16 के प्रथम भाग में ईश्वर बोल रहे हैं; ऐसा प्रतीत नहीं होता कि इसमें कोई प्रश्न है। लेकिन, जब आप पद के दूसरे भाग में पहुँचते हैं, तो आप पढ़ते हैं, "और अब प्रभु परमेश्वर और उसकी आत्मा ने मुझे भेजा है।"

कविता का पहला भाग ईश्वर के अलावा शायद ही किसी अन्य द्वारा बोला जा सकता है, लेकिन बाद वाला भाग कहता है कि वक्ता को ईश्वर ने भेजा है, जो तीसरे व्यक्ति में ईश्वर की बात करता है। तो व्याख्या का प्रश्न यह है: वक्ता एक ही समय में भगवान कैसे हो सकता है और भगवान द्वारा भेजा भी जा सकता है? वक्ता भगवान होकर भी भगवान द्वारा भेजा हुआ कैसे हो सकता है? मुझे नहीं लगता कि उस प्रश्न का कोई अन्य संतोषजनक स्पष्टीकरण है, सिवाय इसके कि यह सुझाव दिया जाए कि यह भगवान के सेवक द्वारा कहा गया है, और भगवान का सेवक स्वयं भगवान है। अब इसीलिए मुझे लगता है कि यशायाह 48:16 को भी एक सेवक परिच्छेद के रूप में शामिल

किया जाना चाहिए। यह प्रभु के सेवक द्वारा कहा गया है, और सेवक स्वयं भगवान है।

आप कहते हैं, "आपको संदर्भ में नौकर का विचार कहां से मिलता है?" यदि आप संदर्भ के साथ आगे बढ़ें, तो मुझे लगता है कि यह काफी स्पष्ट हो जाता है। आप अध्याय 48:16बी में देखते हैं, "प्रभु परमेश्वर और उसकी आत्मा ने मुझे भेजा है" - आपके पास "मैं" है। 49:1 पर जाएँ, "हे द्वीपों, मेरी बात सुनो; हे दूर दूर के राष्ट्रों, यह सुनो: मेरे उत्पन्न होने से पहिले ही यहोवा ने मुझे बुलाया; मेरे जन्म से ही उन्होंने मेरे नाम का उल्लेख किया है। 49:1 में "मैं" कौन है? श्लोक 3 को देखें: "उसने मुझ से कहा, 'हे इस्राएल, तू मेरा दास है।'" देखिए, जब यह अंश अध्याय 49 में आता है, श्लोक 1, 49:1 का "मैं", और का "मैं" 49:3, "उसने मुझ से कहा, 'हे इस्राएल, तू मेरा दास है, जिस में मैं अपना वैभव दिखाऊंगा।" वक्ता को स्पष्ट रूप से सेवक के रूप में पहचाना जाता है। तो ऐसा लगता है कि 48:16बी में, जब यह कहा गया है, "और अब प्रभु यहोवा और उसकी आत्मा ने मुझे भेजा है," वह सेवक बोल रहा है, लेकिन सेवक स्वयं परमेश्वर है। अब, यदि ऐसा मामला है, तो आपके पास एक उल्लेखनीय विचार सुझाया जा रहा है: अर्थात्, नौकर का देवता। मुझे नहीं लगता कि ऐसी कोई अन्य व्याख्या है जो वास्तव में परिच्छेद के शब्दों के साथ न्याय करती हो। तो आपके पास एक गहरा सत्य है जो सुझाया गया है, और यह एक तरह से परोक्ष है। यह स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है। इस पर काम नहीं हुआ। वास्तव में, आपको आश्चर्य होता है कि हर चीज़ को एक साथ कैसे फिट किया जाए। लेकिन मुझे लगता है कि निष्कर्ष यही है, जहां वे सभी विचार आपको उस कविता को उसके संदर्भ में एक साथ फिट करने की कोशिश करेंगे कि क्या पहले और क्या आता है। सेवक बोल रहा है और सेवक ही देवता है।

यशायाह भगवान के लिए बोल रहा है। पिछला सन्दर्भ वह है जहाँ आपका पहला व्यक्ति, ईश्वर, बोल रहा है। अक्सर भविष्यवक्ता पहले व्यक्ति में ईश्वर के लिए बोलते हैं। तो आप कह सकते हैं कि यह भविष्यवक्ता प्रथम व्यक्ति में ईश्वर के लिए इसी प्रकार की बात कर रहा है। लेकिन दूसरे वाक्यांश का "मैं", जैसा कि निम्नलिखित संदर्भ में जाता है, स्पष्ट रूप से नौकर के रूप में पहचाना जाता है। अब, निस्संदेह, कुछ लोग कह सकते हैं कि यशायाह नौकर है। मुझे लगता है कि आपको यह कहने के लिए एक ठोस मामला बनाने में कठिनाई होगी कि यशायाह नौकर है। कभी-कभी

लोग कहते हैं कि यशायाह सेवक है, कभी-कभी लोग कहते हैं कि इस्राएल सेवक है, कभी-कभी लोग कहते हैं कि मसीहा सेवक है, और अन्य कहते हैं कि वह इस्राएल से भिन्न है। लेकिन फिर आप 49:1 के साथ क्या करते हैं, "प्रभु परमेश्वर ने मुझे गर्भ से बुलाया है" - क्या वह यशायाह है? वहाँ "मैं" को देखें—आप अभी भी उस प्रथम व्यक्ति में हैं? "प्रभु ने मुझे गर्भ से बुलाया है।" यदि आप श्लोक 3 पर जाएँ, तो उसने मुझ से कहा, 'हे इस्राएल, तू मेरा दास है, जिस में मैं अपना वैभव दिखाऊंगा।' ऐसा लगता है कि 49:1-3 में "मैं" की पहचान नौकर के रूप में की गई है, और सेवक की पहचान श्लोक 3 में इज़राइल के रूप में की गई है।

ठीक है, फिर आपको अध्याय 49, श्लोक 5 और 6 पर जाना होगा। अगले अनुच्छेद में जाना और अधिक जटिल हो जाता है। लेकिन ऐसा लगता है कि जब हम श्लोक 5 और 6 तक पहुँचते हैं, तो श्लोक 3 में नौकर इसराइल है, लेकिन सेवक का कार्य, आप देखते हैं, श्लोक 5 में, अब कहते हैं कि भगवान ने मुझे गर्भ से बनाया है सेवक—सेवक का कार्य याकूब को उसके पास वापस लाना है, "याकूब को उसके पास वापस लाना और इस्राएल को अपने पास इकट्ठा करना।" जब आप श्लोक 5 पर पहुँचते हैं तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि भले ही नौकर कुछ अर्थों में इज़राइल है, फिर भी नौकर इज़राइल से अलग होगा। इससे एक और मुद्दा उठता है जिस पर हम वहाँ पहुँचने पर अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे।

खैर, मुझे लगता है कि जब आप छंद 5 और 6 पर आते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि भले ही नौकर इज़राइल है, फिर भी एक अर्थ है जिसमें नौकर को इज़राइल से अलग किया जा सकता है। आइए इसे रोके क्योंकि मैं अध्याय 49-50 पर चर्चा करना चाहता हूँ। यह अगले प्रमुख सेवक परिच्छेद में है।

आइए इसे तब तक रोके रखें जब तक हम अध्याय 49 को न देख लें। यशायाह 49 एक प्रमुख अनुच्छेद है और यह श्लोक 1 से लेकर नीचे तक जाता है, शायद श्लोक 12 तक, अगला प्रमुख सेवक अंश। आइए दस मिनट का ब्रेक लें और फिर उस पर वापस आएं।

डाना एंगल द्वारा प्रतिलेखित
कार्ली गीमन द्वारा प्रारंभिक संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन

डॉ. पेरी फिलिप्स
द्वारा अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स
द्वारा पुनः सुनाया गया